

जीवन देवता की साधना-आराधना

अध्यात्म, विज्ञान और आत्म-परिष्कार का तार्किक मार्ग



नर से नारायण और क्षुद्र से महान
बनने की वैज्ञानिक प्रक्रिया।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

भ्रांति



ईश्वर छोटी-मोटी भेंट-पूजाओं,
ईश्वर छोटी-मोटी भेंट-पूजाओं,
चापलूसी या गुणगान से प्रसन्न होता है।
यह क्षुद्र मानसिकता है।

निष्कर्ष: सच्ची आराधना किसी और की नहीं,
बल्कि 'जीवन देवता' (स्वयं के जीवन) की परिष्कार प्रक्रिया है।

यथार्थ



ईश्वर न्यायनिष्ठ और विवेकवान है।
वह व्यक्ति में उत्कृष्ट आदर्शवादिता
(आंतरिक गरिमा) के समावेश
से प्रसन्न होता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वदनीया । ॐ वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगगुरु विवेकानन्द तपोविष्ठ श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



परमाणु (Microcosm)

जो ब्रह्मांड में है, वह सब कुछ पदार्थ के सबसे छोटे घटक 'परमाणु' में भी विद्यमान है।



ब्रह्मांड = परमाणु = मानव चेतना



ब्रह्मांड (Macrocosm)

परमसत्ता (ब्रह्माण्डीय चेतना) का समग्र प्रतीक 'जीव' है। परिष्कृत आत्मा ही परमात्मा है।

सूत्र: कस्तूरी मृग की तरह, असीम शक्तियां हमारे भीतर सुप्त हैं।
उन्हें बाहर खोजना व्यर्थ है।



स्थिति: वातावरण और प्रचलन मनुष्य को भेड़ों
(सामान्य प्रवृत्तियों) के समूह में घसीट लेते हैं।



यथार्थ: 'मनुष्य भटका हुआ देवता है।'
(शुद्धोऽसि-बुद्धोऽसि-निरंजनोऽसि)

मान्यताएं बदलें

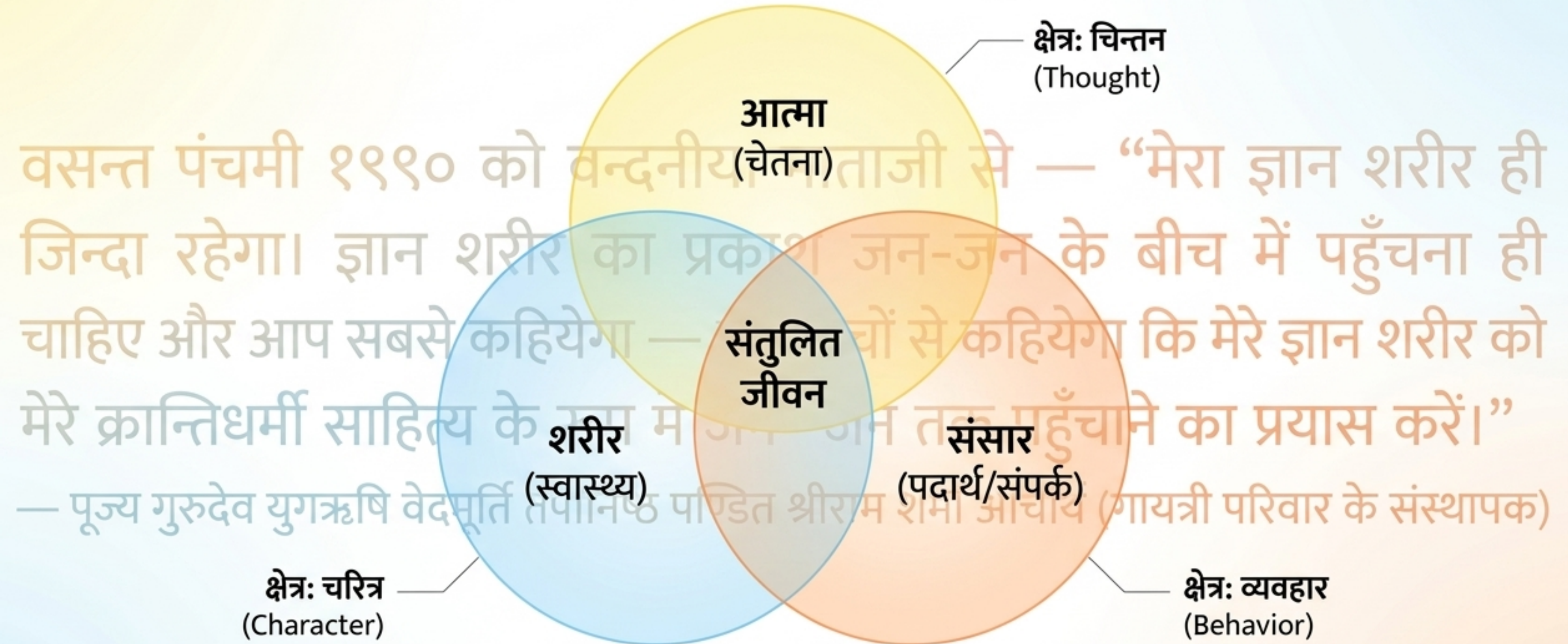
आकांक्षाएं बदलेंगी

गतिविधियां बदलेंगी

क्षुद्र से महान बनेंगे

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगकृषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

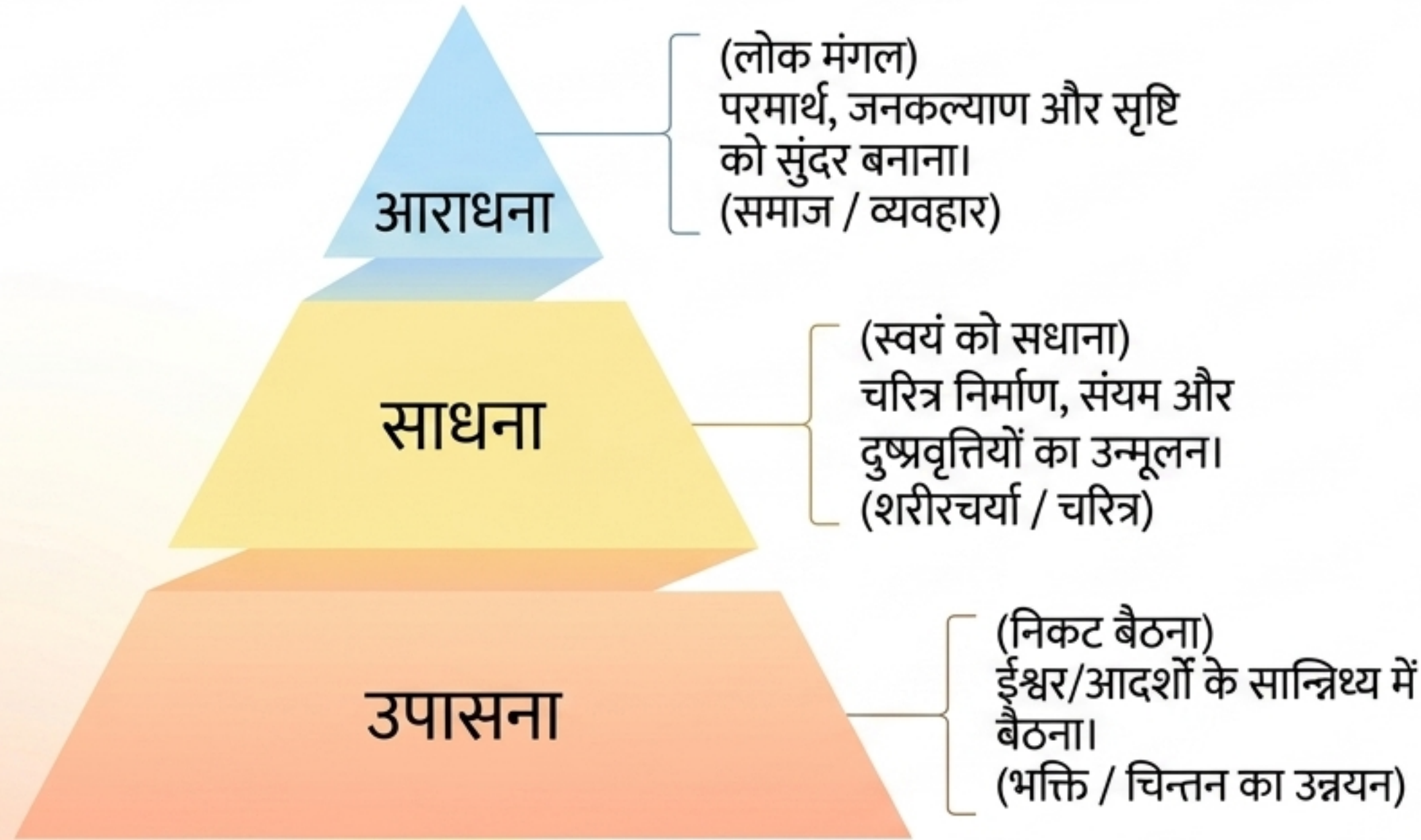
सृष्टि का हर पहलू तीन भागों में है: तीन लोक (स्वर्ग, मृत्यु लोक, पाताल) और तीन शक्तियां (सरस्वती, लक्ष्मी, काली)।



निष्कर्ष: जीवन साधना वह है जहाँ इन तीनों का संतुलन बना रहे और आत्मिक प्रगति प्रधान हो।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और
सबसे कहियेगा – सब बच्चोंधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगक्रषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

जैसे शरीर को आहार, जल और वायु चाहिए,
वैसे ही चेतना के पोषण के लिए तीन माध्यम अनिवार्य हैं।



शरीर की आवश्यकता	आत्मा की आवश्यकता
आहार	उपासना
जल	साधना
वायु	आराधना

उपासना - चिन्तन का परिष्कार

अर्थ: उप + आसना = निकट बैठना। (आदर्शों के निकट बैठना)।

- ✓ ईश्वर निराकार है; उत्कृष्ट चिन्तन ही उसके वास्तविक दर्शन हैं।
- ✓ राम, बुद्ध, गाँधी जैसे महामानवों को प्रतीक मानकर उनके साँचे में ढलने का प्रयास।
- ✓ उद्देश्य मात्र कर्मकांड नहीं, बल्कि भाव-संवेदनाओं का उन्नयन (Emotional elevation) है।



चेतावनी: बिना भाव जोड़े पूजा लकीर पीटने जैसी है, जो आत्मशिक्षण नहीं कर सकती।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



साधना - चरित्र निर्माण की वेदी

अर्थ: जीवन को सधाना (Life Discipline)। अनगढ़ पत्थर को तराशना।



१. संयम (आहार-विहार, रहन-सहन)

२. दुष्प्रवृत्तियों का उन्मूलन

३. सद्गुणों का विकास

४. पवित्र और प्रखर व्यक्तित्व

सिद्धांत: धुले हुए कपड़े पर ही रंगाई ठीक होती है। परमात्मा का अवतरण केवल चरित्रवान व्यक्ति में ही संभव है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संरक्षक) 

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

आराधना - समाज के ऋण की अदायगी

संसार विराट ब्रह्म का साकार रूप है। इसकी निस्वार्थ सेवा ही सच्ची आराधना है।



नियम (The Rule of Contribution): आजीविका का कुछ अंश (समयदान और अंशदान) नियमित रूप से जनकल्याण के लिए निकालना अनिवार्य है। पेट-परिवार तक सीमित रहना नरपशु का लक्षण है।

पतन के तीन कारण - त्रिविध भवबन्धन

हल्की वस्तुएं तैरती हैं, भारी डूब जाती हैं। आध्यात्मिक प्रगति में सबसे बड़ी रुकावट ये तीन भार हैं:



१. लोभ (Greed): वासना और तृष्णा।
अनीति और बेईमानी के बिना लालच
कभी पूरा नहीं होता।

२. मोह (Attachment): आत्मीयता को
सिर्फ अपने शरीर और छोटे से परिवार तक
सीमित रखना। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की मृत्यु।

३. अहंकार (Ego): घमंड, फैशन,
शेखीखोरी, और दूसरों को नीचा दिखाने की
निरंतर ललक।

भवबंधनों से मुक्ति का मार्ग

भवबन्धन (The Burden)	प्रभाव / डूबना (The Impact)	मुक्ति का उपाय / तैरना (The Solution)
लोभ (Greed)	संग्रह, अपव्यय, अनीति, विलासिता	सादा जीवन-उच्च विचार, ईमानदारी की कमाई, मितव्ययिता।
मोह (Attachment)	परिवार में जकड़न, संकीर्णता, स्वार्थ	‘वसुधैव कुटुम्बकम्’, सभी के प्रति आत्मीयता, समाज की सेवा।
अहंकार (Ego)	उद्धत व्यवहार, कलह, दिखावा, ईर्ष्या	विनयशीलता, सज्जनता, निष्पक्ष आत्म-समीक्षा।

निष्कर्ष: इन तीन शत्रुओं से नित्य लड़ना और उन्हें हटाना ही वास्तविक मोक्ष है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

चेतना की शक्ति — संसार की सबसे बड़ी शक्ति

पदार्थ (Matter) से महत्वपूर्ण शरीर है ➡ शरीर से महत्वपूर्ण आत्मा (Consciousness) है।



आत्मबल का चमत्कार:

- चेतना ही विज्ञान, दर्शन और भौतिक सुविधाओं का निर्माण करती है।
- आंतरिक प्रखरता और आस्थाओं के बल पर अभावग्रस्त परिस्थितियों को भी अनुकूल बनाया जा सकता है।

Key Insight: समृद्धि बाहरी वस्तुओं से नहीं, चरित्र की प्रामाणिकता से आती है।
खोटा सिक्का कुछ देर भ्रम में डाल सकता है, पर प्रगति नहीं कर सकता।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रज्ञायोग - सार्थक और समग्र साधना

दुनिया में शरीर और धन के लिए कई व्यवस्थाएं हैं, पर चेतना परिष्कार के लिए सबसे व्यवस्थित आधार **प्रज्ञायोग** है।

प्रज्ञायोग

समग्र विधा (Holistic):

केवल जप-ध्यान नहीं,
बल्कि जीवन के हर क्षेत्र
में आदर्शवाद।

मान्यता में
आत्मपरायणता:
स्वयं को शरीर नहीं,
बल्कि एक दिव्य
आत्मा मानना।

भाव प्रधान
(Emotion-led):
इसमें कर्मकांड कम है
और भाव-चिंतन
अधिक है।

कर्तव्य में धार्मिकता:
दैनिक कार्यों को
ईमानदारी और उत्कृष्टता
से करना।

वसन्त पंचमि १९७० के वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
सब बख्खो से कहियेगा कि आत्मा जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और

— “नमः गुरुदेव युगान्धवि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)
ज्ञान शरीर को मेरे कान्तिधर्म साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच सब बच्चों में कहिरो आप सबसे कहियेगा नेक्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोविष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

जीवन साधना के चार दैनिक संयम



इन्द्रिय संयम

जीभ (स्वाद/वाणी) और कामुकता पर नियंत्रण। यह शारीरिक ओज और स्वास्थ्य की रक्षा करता है।



समय संयम

समय ही जीवन है। आलस्य और प्रमाद से बचना, एक-एक क्षण का रचनात्मक सदुपयोग करना।



अर्थ संयम

ईमानदारी की कमाई। विलास में खर्च न करके परमार्थ के लिए नियमित अंश निकालना।



विचार संयम

विवेक को चौकीदार बनाना। कुविचारों को सद्विचारों से काटना। रचनात्मक चिंतन।

निष्कर्ष - जीवन साधना का महापथ



अध्यात्म का सार:

‘एकै साधे सब सधे।’ आत्मबल सधने से जीवन का हर क्षेत्र स्वयं सध जाता है।

नकद धर्म:

जीवन साधना ‘इस हाथ दे, उस हाथ ले’ का सौदा है। परिणाम मृत्यु के बाद नहीं, तत्काल मिलता है।

उपलब्धियां:

1. आत्मसंतोष (Inner Peace)
2. लोक सम्मान (Social Respect)
3. दैवी अनुग्रह (Divine Grace)

अंतिम संदेश: मनुष्य जीवन स्रष्टा की एक तिजोरी है। इसे लोभ-मोह-अहंकार में नष्ट न करें, इसे प्रज्ञायोग की साधना से देवत्व में बदलें।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)